बोलि न बोल्यो बोल दयो फिर ताहि न दीन्हों।
मारि न मार्‌यो शत्रु क्रोध मन बृथा न व्कीन्हों।
जुरि न मुरे संग्राम लोक की लीक न लोपी।
दान सत्य सम्मान सुयश दिशि विदिशा ओपी।
मन लोभ मोह मद काम बस भये न केशवदास भणि।
सोई परब्रह्म श्रीमान हैं अवतारों अवतार मणि।।17।।

शब्दार्थ—दयो = दिया। जुरि = जुड़कर अड़कर। लीक = मर्यादा। ओपी = प्रकाशित हैं। भणि = कहना। मणि = श्रेष्ठ।

प्रसंग—महर्षि वाल्मीकि केशव से राम के गुणों का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या—केशवदास कहते हैं कि महर्षि वाल्मीकि राम के गुणों का वर्णन करते हुए कहने लगे कि राम अपने वचनों पर सदैव दृढ़ रहते हैं। उन्होंने एक बार जो कह दिया, फिर उस विषय में दोबारा नहीं बोले। वे इतने उदार और महान् दानी हैं कि एक बार जिसको दान दे दिया, उसे फिर कभी कुछ नहीं दिया, अर्थात् उसे एक बार में ही इतना दान दे दिया कि फिर कभी उसे कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं रही। उन्होंने जिस शत्रु को एक बार मार दिया फिर उसे दोबारा नहीं मारा, अर्थात् उनके हाथ से जो शत्रु मारा गया उसे मुक्ति मिल गई और फिर दोबारा जन्म धारण करने-मरने का अवसर ही नहीं आया। उन्होंने कभी व्यर्थ में क्रोध नहीं किया, अर्थात् जब वे क्रोध करते हैं तो राक्षसों और अत्याचारियों का विध्वंस करके ही दम लेते हैं। युद्ध में जब वे शत्रु के सामने अड़ गये तो फिर उसका नाश किये बिना उन्होंने युद्ध-स्थल से मुख नहीं मोड़ा। उन्होंने कभी लोक की मर्यादा का लोभ नहीं किया, अर्थात् सर्वशक्ति सम्पन्न होते हुए भी वे लोक-मर्यादा के रक्षक रहे हैं। उनके दान, सत्य, सम्मान और सुयश से दिशा और विदिशाएँ प्रकाशित हैं। उनका मन कभी लोभ, मोह, मंद और काम के वशीभूत नहीं हुआ। ऐसे श्रेष्ठ गुणों वाले श्रीराम परम ब्रह्म के अवतार भी हैं और स्वयं अवतारी भी हैं।

विशेष—लाला भगवानदीन ने इस छन्द की अंतिम पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है—

'वे श्रीराम जी साक्षात् परब्रह्म हैं और अवतार धारण किए हुए रूपों में सबसे श्रेष्ठ अवतार हैं।'

किन्तु वह अर्थ संगत नहीं जान पड़ता। इस पंक्ति में केशव कहना चाहते हैं कि राम अवतार और अवतारी दोनों हैं। राम के इन गुणों का प्रतिपादन पुराणों में पर्याप्त विस्तार से हुआ। तुलसी ने भी राम को अवतार और अवतारी दोनों माना है। डॉ. उदयभानुसिंह के शब्दों में—

'रामावतार के विषय में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अवतारी कौन है? 'नारदपुराण' आदि के कृष्ण की भाँति तुलसी के राम अवतार भी हैं और अवतारी भी। जो उपनिषद् का ब्रह्म है, जो वैष्णवों का परम विष्णु है, जो शैवों का परम शिव है, जो शक्तियों की परम शक्ति है, वही अवतारी राम हैं।'—तुलसी-दर्शन-मीमांसा, पृष्ठ 76-77

अलंकार—अनुप्रास, उल्लेख।